काल गर्ल की चूत चोदने का नशा

“नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम सुभान है.. आज मैं अपनी जिंदगी की एक सच्ची घटना बताने जा रहा हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप सभी को मेरी यह कहानी पसंद आएगी।... [Continue Reading] ...”

Story By: सुभान खान (subhank)
Posted: Thursday, July 2nd, 2015
Categories: रंडी की चुदाई / जिगोलो
Online version: काल गर्ल की चूत चोदने का नशा

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

काल गर्ल की चूत चोदने का नशा

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम सुभान है.. आज मैं अपनी जिंदगी की एक सच्ची घटना बताने जा रहा हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप सभी को मेरी यह कहानी पसंद आएगी।

दोस्तो, यह बात उन दिनों की है.. जब पहली बार मैं मुंबई आया था।
एक दोस्त ने मुझे मुंबई बुला कर अपना फोन बंद कर दिया। मैं बहुत परेशान था.. मुंबई का ही हिस्सा माने जाने वाले एक शहर थाणे के रेलवे स्टेशन पर पूरी रात गुजराने के बाद मेरी मुलाक़ात एक लड़की से हुई.. जिसका नाम शबाना था।
मैं उस लड़की को घूरता रहा.. इस दौरान मेरे दोस्त ने मुझे कॉल किया.. मेरी खुशी का तो ठिकाना ही ना रहा।

फिर हम दोनों थाणे से मुलुंड आए.. जहाँ वो रहता था। उस रोज मैं बहुत थक चुका था।
मेरा दोस्त विकास बोला- सुभान तुम आराम कर लो.. शाम को कहीं बाहर घूमने चलते हैं।

विकास एक ऑटो ड्राइवर था.. शाम करीब 6.30 बजे वो आया- अरे यार.. तुम अब तक तैयार ही नहीं हुए.. हमें बाहर जाना था..
मैं- बस 5 मिनट विकास.. मैं अभी तैयार होकर आता हूँ।

मैं झट से गया और फट से नहाकर आ गया।

विकास- अब चलें ?
‘हाँ हाँ ज़रूर..’

घर से निकल कर हम एक लेडी बार में गए.. जहाँ मेरी आँखें फटी की फटी रह गईं.. जिस अप्सरा को मैंने सुबह स्टेशन पर देखा था.. वो उसी बार में मुझे फिर मिली.. मुझे यकीन ही

नहीं हो रहा था।

तभी उसने मुझे देखते ही अपनी सहेलियों से कुछ कहा.. मुझे कुछ समझ ही नहीं आया।

खैर.. हम दोनों ने उस रात बहुत शराब पी ली थी। जैसे-तैसे हिलते-हिलाते घर पहुंचे।

दूसरे रोज जब आँखें खुलीं.. तो मुझे वही लड़की याद आ रही थी। मुझसे रहा नहीं गया.. मैं झट से उठ कर विकास के कमरे में गया.. पर विकास जा चुका था।

अब मैं विकास के आने का इन्तजार कर रहा था।

विकास के आते ही मैंने उससे कहा-विकास यार आज फिर चलें क्या. ?

विकास- क्या बात है भाई.. एक ही दिन में इतना एंजाय ?

'हाँ भाई..'

अब हम फिर उसी बार में चल दिए।

विकास- क्या बात है भाई.. आँखें किसी को ढूंढ रही हैं ?
'नहीं यार.. ऐसी बात नहीं..

मैं चारों तरफ नजरें घुमाता रहा.. पर आज वो नहीं दिखाई दी। मैं उदास था कि उतने में वो मेरे सामने थी.. मुझसे रहा नहीं गया। मैं उसके नजदीक जा पहुँचा।

'एक्सक्यूज मी.. मेम, आई एम सुभान..'
'हाँ बोलिए.. ?'
'मैं आपसे दो मिनट अकेले में बात करना चाहता हूँ..'

वो मुझे मेकअप रूम में ले गई।
‘हाँ कहिए.. आप कुछ कहना चाहते हो.. कहिए..’
‘मेम.. आपका नाम क्या है ?’
‘शबाना.. और आपका ?’
‘सुभान.. मेम वो..’
‘हाँ बोलिए न..’

मेरी फटी पड़ी थी.. मैं पहली बार किसी लड़की से अकेले में बात कर रहा था।
मेरी नजरें बार-बार उसके सीने पर जा रही थीं।

उसने ये नोट कर लिया कि मैं उसके मम्मों को घूर रहा हूँ।
वो बोली- जल्दी बोलो.. धंधे का टाइम है।

अभी मैं कुछ समझ पाता.. तब तक वो वहाँ से चली गई।
मैं अपने टेबल पर फिर से आकर बैठ गया।

विकास- क्या बात है मेरे दोस्त.. बहुत परेशान से लग रहे हो ?
‘नहीं यार.. कोई बात नहीं..’
विकास ने ज़िद पकड़ ली- नहीं तुम्हें बताना होगा.. क्या बात है ?
तब मैंने विकास से कहा- मुझे शबाना चाहिए..
विकास- बस इतनी सी बात.. तुम रूको.. मैं अभी बात करके आता हूँ।

विकास के जाने के बाद मेरा अपने आप पर कंट्रोल नहीं हो रहा था। मेरा लंड अंडरवियर में फुंफकार मार रहा था।
मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ..

तभी अचानक मेरा दोस्त मेरे सामने आ गया।
‘सुभान.. यार तू बहुत लकी है..’
मैंने पूछा- क्यों यार.. क्या हुआ.. ?
‘उसने आज की रात तुम्हारे साथ रहने की बात मान ली है।’
मेरी खुशी का तो ठिकाना ना रहा।

‘विकास.. मैं इसे कहाँ ले जाऊँ ?’
‘तुम टेंशन मत लो.. मैं अभी सब इंतजाम किए देता हूँ।

वो अपने किसी दोस्त मंजीत के यहाँ हमें ले गया.. फिर वहाँ प्लान बना कि मैं और शबाना मंजीत के फ्लैट में रुकेंगे.. और विकास मंजीत को अपने घर ले जाएगा।
मैं बहुत खुश था.. मुंबई आते ही चोदने का जुगाड़ हो गया।

मैंने शबाना से कहा- क्या तुम कुछ लोगी ?
शबाना- जी ?
मैंने फिर कहा- क्या लोगी.. वोडक़ा.. बियर.. ?
उसने कहा- वोडक़ा..

मैं गया और उसके लिए वोडक़ा ले आया।

शबाना- जी.. आप कुछ नहीं लोगे।
‘जी लूँगा..’
‘क्या.. ?’
‘आपकी…’

शबाना हँस पड़ी।

देखते ही देखते हमने आधी बोतल शराब पी ली.. शबाना मदहोश हो चुकी थी और मैं बेकाबू हो गया था।

शबाना- सुभान जी.. मुझे वॉशरूम जाना है।
मैं- आइए..
शबाना के कदम लड़खड़ाते हुए वॉशरूम की तरफ चल दिए। वो धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी कि अचानक ज़ोर से उसके गिरने की आवाज़ आई।

मैं उठा और दौड़ते हुए शबाना के पास पहुँचा.. वो बेहोश हो चुकी थी। मैं उसे उठा कर कमरे में ले गया.. फ्रिज में से ठंडे पानी की बोतल ले आया और उसके मुँह पर पानी की बूँदें दे मारीं।

रात बहुत हो चुकी थी.. मैंने देखा कि पानी के वजह से उसके कपड़े गीले हो चुके थे। मैं गरम हो उठा और धीरे-धीरे उसके कपड़े उतारने लगा कि तभी अचानक मुझे मेरे लंड पर कुछ महसूस हुआ।

जैसे ही मेरी नज़र लौड़े पर गई.. तो मैंने देखा कि शबाना मेरे लंड को सहला रही है।
मैं पागल सा हो गया.. मैंने अपने दोनों होंठ उसके होंठों पर रख दिए और ज़ोर-ज़ोर से चूसने और काटने लगा।
चुदास की आग दोनों तरफ बराबर की लगी थी। करीब 20 मिनट तक चुम्मा चाटी.. ज़ोर-शोर से चलती रही।

फिर मैंने एक-एक करके शबाना के सारे कपड़े उतार दिए।
अब वो सिर्फ़ ओर बोले जा रही थी- फ़क़ मी.. फ़क़ मी..
मेरा मन अभी चुम्मा-चाटी से भरा नहीं था.. फिर शबाना मेरे ऊपर आ गई और मुझे ज़ोर-ज़ोर से किस करने लगी।

उसने मेरे सारे कपड़े उतार दिए फिर चुदाई का जो दौर चला.. मैं मस्त हो उठा वो एक शानदार रंडी थी। पूरी रात जोर-ज़ोर से चुदाई का जादू चला। मैंने शबाना को सारी रात उठा-उठा कर चोदा।

अब सुबह के 5 बज चुके थे कि तभी मंजीत का फोन आया।

'सुभान भाई सॉरी.. यार परेशान किया.. मैं विकास के घर से ही काम पर चला जाऊँगा.. आप बस एंजाय करो।'

मैंने कहा- ओके सर जी..

मैंने शबाना की और देखा वो मेरी आँखों में देख रही थी.. हम दोनों ही बहुत थक चुके थे.. सो बिना कुछ बोले एक-दूसरे की बाँहों में लिपट कर सो गए।

दोस्तो, बाकी की कहानी मैं आप सभी को अगले भाग में सुनाऊँगा.. जब तक़ आप सभी अन्तर्वासना की रसीली कहानियों में अपनी अन्तर्वासना को ढूँढते रहो.. और आनन्द लेते रहो।
आपको मेरी कहानी पसंद आई या नहीं.. तो ईमेल ज़रूर कीजिएगा।
subhank088@gmail.com